* पंचम अध्याय *

: पंचम अध्याय :

धर्मवीर भारती के उपन्यासों में चित्रित नारी-जीवन।

भारतीय संस्कृति में नारी का स्थान महत्वपूर्ण है। नारी के बिना संस्कृति और सभ्यता का कोई मूल्य नहीं है। नारी ने कई रूपों में पुरूष का संवर्धन किया है। प्रोत्साहन और शक्ति दी है। वह समाज में कभी जन्मदात्री, पोषणकर्ता माता के रूप में आती है। नारी ने अपनी कोमलतम भावनाओं से मनुष्य का जीवन मधुमय बनाया है। वह एक प्रेरणादायी शक्ति है। कोमलता, सौंदर्य और त्याग इन तीन गुणों के कारण नारी की महिमा में चार चाँद लगाये हैं। कारण वह त्याग और सेवा का प्रतीक है। सृष्टि के विकास में उसका महत्वपूर्ण स्थान है। सृष्टि का आधार नारी है।

यही नारी विभिन्न कालों में तुलिकाओं, अनेक रंग-रेखाओं में चित्रित होती रही और प्रत्येक युग के बदलते परिवेश में उसके व्यक्तित्व के विविध चित्रों में भी अंतर आता रहा है। नारी वैदिक काल में विदुषी, वीरगाथाकाल में वीरांगना, भक्तिकाल के सूर की प्रेम-प्रतिमा, तुलसी की त्यागमयी शालीनी, रीतिकाल की विलास में झुमनेवाली अभिसारिका, आधुनिक काल में "मानव" रूप में अंकित हुई है। नारी के विकास पर ही संस्कृति का विकास निर्भर है। संस्कृति का विकास ज्यादातर नारी पर ही अवलंबित है। नारी से ही समाज को प्रेम और प्रेरणा मिलती है। नारी की इसी महत्ता को जयशंकर प्रसादजी ने भी "कामायनी" में नारी के बारे में कहा है कि -

"नारी तुम केवल श्रद्धा हो
विश्वास रजत नग पग तल में
पीयूष स्त्रोत सी बहा करो,
जीवन के सुन्दर समतल में।"[१]

इसी तरह जयशंकर प्रसादजी ने नारी को श्रेष्ठ स्थान दिया है। जिंदगी में आनेवाली स्थिरता को समाप्त कर देनेवाली और मानव समाज की परिस्थितियों को परिवर्तित

करानेवाली प्रमुख रूप से नारी ही है। पुरूष और नारी एक दूसरे के पूरक हैं। समाज में नारी और पुरूष को समान महत्त्व है। नारियों ने सदैव पुरूषों की सहायता करके परिस्थितियों में बदलाव लाने का प्रयास किया है। नारी ही पुरूषों को अपना ममत्त्व और आत्मविश्वास देकर उनके सभ्यता के विकास को बढ़ाने का प्रयास करती है। समाज में होनेवाला नारी का स्तर ही समाज में सांस्कृतिक स्तर को दर्शाता है। जीवन का कोई भी पुण्यकर्म नारी के बिना सार्थक नहीं माना गया है।

अपनी लघुता में महत्ता, शीतलता में भी जीवन की उष्मा तथा सुन्दर तन में भी शिवम् छिपाये रहनेवाली यह नारी सदा से समाज का ही नहीं, साहित्य की भी प्रेरक तत्व रही है। नारी के अभाव में समाज अपूर्ण ही है। जिस तरह नारी के बिना पुरूष तथा समाज में पूर्णता नहीं आ पाती, उसी प्रकार साहित्य भी नारी के बिना अधुराही है। नारी हमेशा नवनिर्माण की प्रेरणा के रूप में प्रस्तुत हुई है।

संसार के प्रत्येक साहित्य में नारी का स्थान अत्यंत महत्त्वपूर्ण है। प्रत्येक भाषा के साहित्य में हमे नारी का वर्णन मिलता है। आदिकाल में वह युद्ध एवं वीरतापूर्ण वर्णनों की मुख्य प्रेरणा रही है। संतकाव्य के अंतर्गत उसको कामिनी कह कर पाप की मूल एवं नरक का हेतु बताया गया है। भक्तिकाल में वह सहानुभूति की पात्र रही है। उसके माता रूप की आराधना की गयी तथा उसके कामिनी रूप की निंदा तक की गयी है। समाज में किसी सीमा तक उसको हीन समझा गया है।

रीतिकाल के काव्य में नारी को लेकर अनेकानेक रचनाएँ लिखी गयी, परंतु वह भोग की वस्तु बनी रही। आधुनिक काल में नारी के प्रति दृष्टिकोन बदल गया है। इस काल में नारी को न बिल्कुल हीन समझा गया है न त्याज्य माना है। भारतेंदु युग में उसके उद्धार की चर्चा की गयी है। द्विवेदी युग में उसके प्रति सहानुभूति एवं आदर का भाव जागृत हुआ है। उसके मातृत्व को लेकर उसे महिमा से मंड़ित किया गया है।

साहित्य के अंतर्गत उपन्यास साहित्य में भी नारी का स्थान महत्त्वपूर्ण है। नारी हमेशा साहित्य निर्माण की प्रेरणा के रूप में प्रस्तुत हुई है। पुरूष पात्रों के साथ-साथ

नारियों का चरित्र-चित्रण भी शुरू से होता आ रहा है। अगर किसी उपन्यास में पुरूष के साथ नारी का चित्रण न हो तो वह उपन्यास अधुरा लगता है। नारी तथा उसका चरित्र पुर्वापार से लेकर आज तक एक कुतुहल का विषय रहा है। नारी जो पति के लिए चरित्र, संतान के लिए माता, समाज के लिए शील, विश्व के लिए दया तथा जीवमात्रा के लिए करूणा का संजोग करनेवाली एक महान प्रकृति है। इस प्रकृति को उघाड़ना उपन्यासकार के लिए एक चुनौती का विषय रहा है। नारी के चरित्र को उघाड़ने की अनेक उपन्यासकारों ने भरसक चेष्टाएँ की है और उसमें वे काफी मात्रा में सफल भी हो चुके हैं।

धर्मवीर भारती जिन्हें हिंदी कविता में सप्तकीय कवि, नाटककार तथा कनुप्रिया के कवि के साथ ही उपन्यासकार के रूप में पर्याप्त स्थान मिला है। भारती जी प्रेमचंद के बाद के उपन्यासकार हैं। हिंदी जगत के जाने माने लेखक हैं। अपने लेखन काल में भारती जी ने उपन्यास, कहानियाँ, नाटक, काव्य लिखे हैं। वे प्रायः रोमँटिक प्रकृति के व्यक्ति हैं। उनके तीन उपन्यास हैं - "गुनाहों का देवता", "सूरज का सातवाँ घोडा", और "ग्यारह सपनों का देश"।

धर्मवीर भारती के "गुनाहों का देवता" के सभी नारी पात्र प्रायः मन की पीड़ा के बोझ से दबे-दबे से लगते हैं। इस उपन्यास का प्रधान नारी पात्र सुधा है और अन्य नारी पात्रों में पम्मी, बिनती और गेसू का नाम आता है। अनपढ़ नारी के रूप में इस उपन्यास में सुधा की बुआ और महाराजिन आती है। जिन पात्रों का सिर्फ उल्लेख मात्र आया है ऐसे कई नारी पात्र इस उपन्यास में दिखायी देते हैं - जैसे - मालिन, बर्टी की पहली पत्नी, बर्टी की बेटी रोज, सुधा की सहेलियाँ - कामिनी, प्रभा, लीला, बर्टी की दूसरी पत्नी - जेनी।

धर्मवीर भारती के उपन्यासों के नारी पात्र

भारती ने उपन्यासों के नारी पात्रों के माध्यम से अपने नारीजीवन विषयक धारणा की अवधारणा की है, अतएव भारती के उपन्यासों में चित्रित पात्रों के परिचय के बिना भारती के उपन्यासों में अंकित नारीजीवन को समझ लेना कठिण है। अतः हम क्रमशः इन पात्रों को चित्रित करेंगे।

१) **"गुनाहों के देवता" के नारी पात्र** :-

क) **सुधा** :-

"गुनाहों का देवता" उपन्यास की नायिका सुधा है। सुधा डा.शुक्ला की बेटी है। तीन वर्ष की आयु में ही माँ की मौत होने के कारण सुधा ने अपनी बुआ के पास सातवीं कक्षा तक पढ़ाई प्राप्त की। जब वह गाँव से शहर आयी थी तब बहुत शर्मीली, भोली थी, आठवीं में पढ़ती थी। इतनी बड़ी होने पर भी वह छोटे बच्चों की तरह बर्ताव करती है। वह कभी-कभी अपनी कापी फाड़ ड़ालती है और रूठती है और जब तक डाक्टर साहब उसकी सांत्वना नहीं करते तब तक स्कूल नहीं जाती है। बहुत ही हठीली स्वभाव की है।

बचपन से सुधा लाड़-प्यार में पली है। सुधा और पापा एक-दूसरे पर बहुत प्यार करते हैं। साथही वह चन्दर से बहुत ड़रती है। वह चाहे किसी का भी कहना न माने पर चन्दर का कहना उसे मानना ही पड़ता है। चन्दर के शब्दों में ऐसा क्या चमत्कार है, इसे सुधा स्वयं भी नहीं जानती है। "सुधा के प्रति अधिकार के साथ चन्दर के मन में आकर्षण भी पैदा हुआ। एक ओर अगर चन्दर ने सुधा के व्यक्तित्व को आकार दिया था, तो दूसरी ओर सुधा की निगाहों ने चन्दर के प्राणों में अमृत भरा था। सुधा उसके लिए आत्मा के समान बन गयी थी।"[२] इसतरह दोनों में प्यार बढ़ता है।

कन्या, जो परिस्थितियों वश स्वेच्छा से परिवार तथा अपने माता-पिता, भाई-बहन के लिए कर्तव्य का पालन करते हुए अपने सुख का त्याग करती है। दूसरा रूप उस कन्या में दिखायी देता है, जो अपनी माता-पिता की इच्छा का विरोध नहीं करना चाहती। चाहे उन्हें उसके लिए कितना ही कष्ट क्यों न सहना पड़े। वे असंतुष्ट रहती हैं, शिकायत करती है। लेकिन आज्ञा को या माता-पिता की इच्छा के घेरे को तोड़कर बाहर नहीं आती हैं।

"गुनाहों का देवता" उपन्यास की नायिका सुधा जो आदर्श कन्या के रूप में भी दिखायी देती है। बेटी के रूप में हम उसका परिचय उपन्यास के प्रारंभ में प्राप्त

करते हैं। सुधा डा.शुक्ला की इकलौती संतान है। जिसने बचपन में सुख और स्नेह पाया है। सुधा घर में सबकी प्यारी है। वह एक कर्तव्यदक्ष नारी के रूप में घर में कार्य करती है। पापा कितने सोसायटियों के मेंबर हैं, पापा को वक्त पर दवा-दारू देना वगैरा बाते सुधा स्वयं अपना कर्तव्य समझकर पुरा करती है। जिससे घर की महाराजिन तक बहुत दुलार करती है। उसके पापा भी हर कहना मानते हैं। पापा खाना खाने बैठते हैं तो वह दुलार से अपनी पापा को पंखा झलाती है।- "सुधा अपने पापा की सिरचढ़ी दुलारी बिटियों में से थी और इतनी बड़ी हो जाने पर भी वह दुलार दिखाने से बाज नहीं आती थी। फिर आज तो उसने पापा की प्रिय नानखटाई अपने हाथ से बनायी थी। आज तो दुलार दिखाने का उसका हक था और भली-बुरी हर तरह की जिद्द का मंजुर करना, यह पापा की मजबुरी थी।"[३] वह अपने पापा के पास इतनी हठ करती है कि पापा मान ही जाते है। वह अपने पापा से यह भी कहती है कि वह शादी नहीं करेगी।

प्राचीन काल से हमारे समाज की यह मान्यता रही है कि नारी एक बार जिस पुरूष से प्रेम करती है, जीवन भर उसी की होकर रहती है। उसके जीवन की सार्थकता ही उसके मिलन में है। प्रेमिका जो अपने प्रेमी के लिए अपना सब कुछ न्योछावर कर देने को तत्पर रहती है, ऐसी प्रेमिका जो प्रेमी को अपनाना चाहकर भी नहीं अपना सकती है।

सुधा डा.शुक्ला की पुत्री है जो चन्दर से प्यार करती है और चन्दर सुधा से। किंतु दोनों ही अपने मन के इस प्यार से अपरिचित हैं। सुधा और चन्दर के सम्बन्ध निश्चल है। वह चन्दर का हर कहना मानती है और मन की हर बात चन्दर को कहती है। उनका यह अनुराग स्वाभाविक रूप से अंकुरित होता रहता है। वह चन्दर के स्नेह में ही पलकर बड़ी हुई है और पूरा जीवन भी चन्दर के स्नेह में बीता है। सुधा का प्रेम बचपन से पनप कर धीरे-धीरे विकसित हुआ है और अब वह बहुत गहरा हो गया है, जिसके बगैर सुधा जी नहीं सकती है। उसे चन्दर सिर्फ अपनाही लगता है। वह चन्दर पर अपनाही हक जमाना चाहती है। चन्दर को वह इतना अपनाती है कि प्यार जैसी बातें भी वह चन्दर को पूछती है - "शायद हम भूल गये हों और तुम्हें मालूम हो। कभी हमने प्यार तो नहीं किया

न?"[४] सुधा चन्दर पर इतना प्यार करती है कि वह उसके खाने-पिने का पूरा खयाल रखती है। वह अगर घर से बाहर किधर भी जाना चाहती है तो भी वह चन्दर को पूछे बगैर नहीं जाती है। क्योंकि चन्दर को लड़कियों का ज्यादा घूमना-फिरना अच्छा नहीं लगता है।

सुधा और चन्दर एक-दूसरे को बहुत चाहते हैं। लेकिन डा.शुक्ला जाति-विवाह के समर्थक हैं। वे अपनी बेटी का विवाह अपने जाति में अच्छे परिवार से करते हैं। सुधा भी पापा के लिए अपने प्रेम का त्याग करती है। लेकिन इसी वजह से सुधा पूरी तरह टूट जाती है। सुधा कितना कष्ट सहती है लेकिन अपने मन की बात किसी के समक्ष नहीं रख पाती और चुपचाप भीतर ही भीतर घुटती रहती है। उसका चुपचाप सहना उसके लिए घातक बन जाता है। सुधा चन्दर से इतना प्रेम करती है कि, वह चन्दर के आग्रह पर कैलाश मिश्र से शादी करती है परंतु सुधा मन से कैलाश के प्रति समर्पित नहीं हो पाती है। विवाह के बाद सुधा शरीर से पति के पास रहती है और मन से चन्दर के पास रहती है। सुधा और चन्दर के प्रेम के बारे में कैलाश जोशी कहते हैं कि - "इसके प्राणों की वही एक मात्र गति है, बुद्धि, नेत्र, वाणी सब में वही बसा हुआ है। उसका मन चातक की तरह एक मात्र चन्दर की अभिलाषा रखता है। वह चन्दर के स्नेह में ही पलकर बड़ी हुई है और उसका पूरा जीवन भी चन्दर के स्नेह में ही बीता है।"[५] चन्दर सुधा की आत्मा है और उसका प्यार प्रेम के उन शिखरों तक पहुँचा है जहाँ मृत्यु के पास पहुँचकर भी सुधा की अंतिम साँसे भी चन्दर का नाम गिनते गिनते रूक जाती है - "चन्दर के अक्षर में उसके हृदय की वेदना का विशाल समुद्र लहराता दृष्टिगोचर होता है, किन्तु लोक-मर्यादा के बंधन सुधा नहीं तोड़ती, प्यार के लिए, यही उसकी, उसके नारीत्व की महानता है।"[६]

सुधा एक अच्छी सहेली है। वह एक अबोध बालिका है तो उसकी सहेली गेसू शायरा है। गेसू शायरा होते हुए भी इसी दुनिया की है और सुधा शायरा न होते हुए भी कल्पना लोक की है। दोनों भी अपने सुख-दुःख की बातें एक दूसरी के साथ करती है। वे दोनों भी भावुक और अनजान है। - "गेसू अगर झाड़ियों से कुछ फूल चुनती तो उन्हें सूँघती, उन्हें अपनी चोटी में सजाती और उनपर चन्द शेर कहने के बाद भी उन्हें माला में पिरोकर अपनी कलाई में लपेट लेती। सुधा लतरों के बीच में सिर रखकर लेट जाती

और निर्निमेष पलकों से फूलों को देखती रहती और आँखों से न जाने क्या पीकर उन्हें-उन्हीं की ड़ालों पर फूलता हुआ छोड़ देती। गेसू हर चीज का उचित इस्तेमाल जानती थी, किसी भी चीज को पसन्द करने या प्यार करने के बाद अब उसका क्या उपयोग है, क्रियात्मक यथार्थ जीवन में उसका क्या स्थान है, यह गेसू खुब समझती थी। लेकिन सुधा किसी भी फूल के जादु में बँध जाना चाहती थी, उसी की कल्पना में डूब जाना जानती थी, लेकिन उसके बाद सुधा को कुछ नहीं मालूम था। "७

सुधा एक अच्छी सहेली, ममतामयी कन्या, साथ ही एक आदर्श प्रेमिका है। नारी में आदर्श प्रेमिका का रूप छिपा हुआ होता है। वह एक ही बार निश्चल प्यार करती है। उसके प्यार को बलात मोड़कर एक पुरूष से दूसरे पुरूष की ओर उन्मुख करना उसे पसंद नहीं होता है। तथापि भारतीय समाज में जाति, प्रतिष्ठा के बहाने कई बार नारी को अपने मन के विरूद्ध बर्ताव करना पड़ता है, यदयपि भारती के उपन्यास में यह स्थिति विद्यमान नहीं है। भारती जी के उपन्यास की नारी प्यार के लिए ही अपने मन के विरूद्ध अनचाही पुरूष से शादी करती है। ऐसी नारी त्याग की मूर्ति होती है। "त्याग" भारतीय नारी की सहज प्रेरणा है। ममतामयी कन्याओं से भारतीय परिवार समृद्ध हैं। परिवार में माता के बाद बहनें और लड़कियाँ ही पुरूषों के खान-पान, दवा-दारू का खयाल करती रहती हैं। इसलिए ही कर्तव्यदक्ष पुत्रियाँ, सभी के स्नेह के लिए पात्र बनती हैं।

ख) <u>बिनती</u> :-

बिनती, जिसे अपने जीवन, कर्म, गुण, शक्ति आदि में विश्वास है और जो परिस्थितियों से बिना ड़रके अपने कर्तव्य में संलग्न, सुंदर एवं सुखद भविष्य में आस्था रखती है। इस उपन्यास में बिनती आस्थावान नारी के रूप में आती है। उपन्यास में बिनती सहायक पात्र के रूप में आती है। बिनती डा.शुक्ला के बहन की कन्या है, जो गाँव में रहनेवाली भोली-भाली लड़की है। वह अपनी माँ के साथ "विदुषी" परीक्षा पास पहला खण्ड़ देने के लिए गाँव से इलाहाबाद में अपने मामा डा.शुक्ला के यहाँ आ जाती है।

बिनती के जन्म के तुरंत ही उसके पिता की मौत हो जाती है, इसलिए

उसकी माँ उसे हमेशा लताड़ती रहती है। बिनती अपनी माँ के द्वारा प्रताड़ित है। माँ के इस व्यवहार से बिनती बहुत तंग आ गयी है, इसलिए वह झट से शादी करके अपनी माँ से छुटकारा पाना चाहती है।

बिनती जब पहली बार गाँव से आयी थी, तब बहुत शरमाती थी। न किसी पुरूष के सामने आती थी, न किसी के साथ बातें करती थी। उसकी भोली सूरत का वर्णन भारती जी ने इस प्रकार किया है - "वह बेचारी बुरी तरह अस्त-व्यस्त थी। दाँत से अपने आँचल का छोर दबाये हुए थी, बाल की तीन-चार लटें मुँह पर झुक रही थीं और लाज के मारे सिमटी जा रही थी और आँखे थी कि मुसकाये या रोयें यह तय ही नही कर पाती थी।। "[८]

नारी का हृदय बहुत कोमल होता है। वह भावनाशील होती है। उसे किसी ने कुछ कहा, तो वह कभी प्रत्युत्तर नहीं करती है। वह रोकर स्वयं का सांत्वन करती है। उसकी वृत्ति सेवाभावी होती है। बिनती भी वैसी ही है। जो सुधा की शादी में सुबह से लेकर रात तक काम करती है। वह सुधा की परछायी के समान है। सुधा से उसका बर्ताव सगी बहन जैसा है। सुधा के बगैर बिनती एक पल भी अलग नहीं रहती है। अगर सुधा को दुःख होता है तो बिनती को भी दुःख होता है। ऐसे कोमल हृदयवाली बिनती को उसकी माँ के अलावा सभी प्यार करते हैं। बिनती को अपनी माँ से गाली-गलौज के बगैर कुछ नहीं मिला है। माता-पुत्री का प्यार शक्तिशाली होता है। पुत्री के आदर्शों की स्थापना करने, उसे सँवरने का काम माता करती है। भारतीय समाज में अपवादात्मक रूप में ही माता-पुत्री का रिश्ता तनावों से कलंकित होता हुआ दिखायी देता है। उस पुत्री को दुर्भाग्यशाली ही कहना उचित है जो माता के होते हुए भी मातृस्नेह से वंचित है। इन दुर्भाग्यशाली लड़कियों में से एक है बिनती। जिसे उसकी माँ हर बार दुत्कारती, फटकारती है।

नारी बहुत सहती है। लेकिन जब उसकी सहन करने की क्षमता खत्म होती है, तब उसका स्वाभिमान जाग उठता है और वह एक विद्रोही बन जाती है।

बिनती की शिक्षा में इतनी रूचि है कि, विदुषी परीक्षा का एक खण्ड देने

के लिए वह गाँव से शहर आती है और दूसरे खण्ड की परीक्षा भी देती है। ससुरालवालों के साथ झगड़ा होने के कारण बिनती की शादी टूट जाती है। तब उसका स्वाभिमान जाग उठता है। वह विद्रोह करती है। वह चन्दर से कहती है - "आखिर नारी का भी एक स्वाभिमान है, मुझे माँ बचपन से कुचलती रही।..... फिर भी सहती गयी। उस दिन जब मण्डप के नीचे मामाजी ने जबरदस्ती हाथ पकड़कर खड़ा कर दिया तो मुझे उसी क्षण लगा कि मुझमें भी कुछ सत्त्व है, मैं इसलिए नहीं बनी हूँ कि दुनिया मुझे कुचलती ही रहे। अब मैं विरोध करना भी सीख गयी हूँ।"[९]

बिनती स्वाभिमानी भी है और होशियार भी। एक बार उसके मास्टरजी बिसरिया उसपर प्यार के डोरे डालने का प्रयास करते हैं, तब बिनती उसकी अच्छी तरह से खिल्ली उड़ाती है। बिनती चन्दर से प्यार करती है। उसका प्यार निस्वार्थ है। वह उससे कुछ पाने की इच्छा नहीं रखती है। उसका प्यार पूरी तरह से समर्पण भावना से युक्त है। हमेशा बिनती चन्दर को सही रास्ते पर लाने में प्रयत्नशील रहती है। जब कभी चन्दर पम्मी के विचार में खोने लगता है तब उसे पम्मी के पास न जाने की सलाह देती है। बिनती चन्दर को देवता मानती है।

पहले सुधा चाहती है कि चन्दर बिनती से विवाह कर ले, पर चन्दर अस्वीकार कर देता है लेकिन अंत में जब सुधा की मृत्यु हो जाती है, तब चन्दर विवशता से बिनती के साथ शादी करने के लिए तैयार होता है। सुधा की चिता की राख से चन्दर बिनती की माँग भर देता है।

नारी को बहुत सहना पड़ता है। लेकिन यह सहना भी उसके लिए हानिकारक होता है। तब उसका स्वाभिमान जाग उठता है, उसका स्फोट हो जाता है और वह विद्रोही बन जाती है। बिनती भी एक प्रतिभा संपन्न, शरारती, आज्ञाकारी युवती है। वह एक निःस्वार्थी प्रेमिका के साथ साथ एक स्वाभिमानी एवं विद्रोही नारी के रूप में दिखायी देती है।

ग) <u>गेसू</u> :-

धर्मवीर भारती के "गुनाहों का देवता" उपन्यास की गेसू एक गौणपात्र है। सुधा और गेसू में बहुत गहरी मैत्री है। सुधा अपने मन की हर बात गेसू से ही बताती है। दोनों एक दूसरे की सुख-दुःख की साथी है।

नारी का सब से गहरा रिश्ता सहेली से होता है। नारी बहुत सारी बातें अपनी माँ-बाप के सामने नहीं प्रकट कर सकती है, लेकिन सहेली के पास कोई बात करने में नहीं झीजकती है। नारी का यह सहेली का रूप सबसे आदर्श रूप है। यही रिश्ता "उपन्यास" में गेसू ने निभाया है, जो सुधा की गहरी दोस्त है। गेसू एक शायर की लड़की है। कॉलेज में जब वह सुधा के साथ होती है तब वह शायरियाँ बनाती है। गेसू और सुधा दोनों कॉलेज में शरारतें करती हैं। सुधा से भी ज्यादा शरारती गेसू है। गेसू एक अच्छी सहेली के साथ-साथ एक आदर्श प्रेमिका के रूप में प्रस्तुत हुई है।

नारी का प्रेम एकनिष्ठ होता है। शादी टूट जाने पर भी वह अविवाहित रहके अपने प्रेमी का प्यार जताती है। गेसू भी अपने चचेरे भाई अख्तर से प्यार करती है। गेसू अख्तर के साथ शादी के सपने देखती है। लेकिन अख्तर की शादी गेसू की छोटी बहन फूल से होती है। इतना सब कुछ होने के बाद भी गेसू के मन में अपने प्रेमी के लिए कोई शिकायत नहीं है। बदले की भावना नहीं है, नफरत नहीं है। गेसू के मन में अख्तर के बारे में प्रेम ही है। वह प्रेम में नफरत को स्थान नहीं देती है। नफरत से उल्टा नुकसान ही होता है। प्रेम, प्रेम ही होता है। गेसू मानती है - "नफरत से आदमी न कभी सुधरा है, न सुधरेगा। बदला और नफरत तो अपने मन की कमजोरी को जाहिर करते है।"[१०] इस तरह वह एक आदर्श प्रेमिका के रूप में प्रस्तुत हुई है। इसके बारे में कैलाश जोशी कहते है - "रंग बदलती हुई दुनिया की तीव्र गति पर गेसू को विश्वास नहीं था लेकिन जब ठोकर लगी तो आँखे खुली की खुली रह गयी।"[११]

गेसू अपने प्रेमी से तिरस्कृत हो जाने पर वह आत्मनिर्भर हो जाती है। अंत तक अपने व्यक्तिस्वातंत्र्य की रक्षा करती है। गेसू की निश्चयवादिता एक खोखला आदर्श है।

घ) प्रमिला डिक्रुज :-

प्रमिला डिक्रुज उर्फ पम्मी एक उपन्यास में ऐसा पात्र है कि जिसकी एक अलग ही कथा है। पम्मी शारीरिक प्रेम के महत्ता की सूचक है।

पम्मी चन्दर की मित्र है। पम्मी ईसाई है। वह पति को छोड़कर वर्तमान में अपने भाई बर्टी के साथ रहती है। पम्मी शुद्ध यथार्थ में जी रही है। पम्मी विवाहित है। तलाक के बाद उसके पति आर्मी में रावलपिण्ड़ी में रहते है। उसका भाई बर्टी अपनी पत्नी की मौत के कारण पागल बन जाता है।

पम्मी देखने में बहुत आकर्षक है। वह एक आधुनिक नारी के रूप में प्रकट होती है। - "वह तेईस बरस की दुबली-पतली तरूणी है। लहराता हुआ बदन, गले तक कटे हुए बाल। एंग्लो इण्ड़ियन होने के बावजूद गोरी नहीं है। चाय की तरह वह हलकी, पतली, भूरी और तुर्श थी। "[१२]

नारी कभी अकेलेपन का दुःख नहीं सह पाती। इसी वजह से उसके मन में तनाव निर्माण होता है। उस तनाव से छुटकारा पाने के लिए वह स्वयं किसी व्यसन में गूँथी जाती है जैसे बार-बार चाय पिना, सिगरेट पिना आदि बातों में अपने को व्यस्त रखती है। उसकी नशा में वह अपने सब दुःख भूल जाती है। थोडी देर के लिए क्यों न हो वह मन को समाधान प्राप्त कर लेती है। वैसे ही पम्मी भी तलाक हो जाने के बाद वह पूरी तरह से बुझ-सी जाती है। तलाक के बाद वह घर से बाहर नहीं आती है। अकेली रहती है और सिगरेट, चाय पीकर अपने मन को संतोष दिलाने की कोशिश करती है। लेकिन अचानक उसे चन्दर जैसा दोस्त मिल जाता है। चन्दर बेतकल्लुफी है। उसकी दोस्ती की खातिर पम्मी सिगरेट पिना छोड़ देती है।

पम्मी में पश्चिम-प्रेम चित्रित है, जिसमें सुविचारित जाँच-पड़ताल, तर्क और अतिऔपचारिकता है। जिससे पम्मी आधुनिक नारी के रूप में दिखायी देती है। प्रथमतः पम्मी ने चन्दर को शारीरिक दृष्टि से ही देखा था किन्तु धीरे-धीरे पम्मी का चन्दर के बारे में प्यार बढ़ने लगता है। पम्मी जब चन्दर के साथ सेक्स की बातें करती है, तब चन्दर

विचलित हो जाता है। पम्मी को कभी-कभी लगता है कि चन्दर सुधा से प्यार करता है फिर भी पम्मी चन्दर को प्राप्त करना चाहती है। चन्दर को जानने के लिए एक बार पम्मी सुधा से पुछती है कि - "आप कपूर को प्यार तो नहीं करती? उससे विवाह तो नहीं करना चाहती। "[१३]

पम्मी को "विवाह" नाम से बहुत चिढ़ है। उसका और उसके भाई बर्टी का वैवाहिक जीवन असफल रहता है, इसी कारण उसे विवाह से बहुत चिढ़ है। वह चन्दर से कहती है कि उसे स्वयं को विवाह से नफरत है। क्योंकि विवाह के पहले पुरूष स्त्री को उँची निगाहोंसे देखता है और बाद में सिर्फ वासना की दृष्टि से देखता है। इसलिए पम्मी का कहना है कि विवाह में प्रेम को महत्त्व नहीं है।

नारी के लिए पुरूष का सहारा अनिवार्य है। अगर वह पुरूष के बिना अकेले रहने का ढाढ़स करे तो उसे समाज बुरी नजरों से देखता है। उसका जीना हराम कर देता है। इसलिए भारतीय समाज में विवाह आवश्यक माना है। विवाहसे पति-पत्नी में प्यार स्थायी होता है। इसी वजह से नारी जीवन में विवाह को महत्त्वपूर्ण स्थान है। पम्मी भी पहले विवाह से नफरत करती है, लेकिन बाद में पम्मी को पता चल जाता है कि स्त्री स्वतंत्र नहीं रह सकती। उसके पास पत्नीत्व के सिवा कोई दूसरा मार्ग नहीं है। स्त्री अपना शरीर खोकर भी तृप्ति नहीं पाती। वासनात्मक प्यार स्थायी नहीं होता। पत्नीत्व स्थायी होता है ऐसा उसे लगता है, उसका कहना यहाँ तक निर्णायित होता है कि - "हिन्दुओं के यहाँ प्रेम नहीं वरन् धर्म और सामाजिक परिस्थितियों के आधार पर विवाह की रीति बहुत वैज्ञानिक और नारी के लिए सबसे ज्यादा लाभदायक है। "[१४] अंत में एक चिठ्ठी चन्दर के पास छोड़कर अपने पति के यहाँ चली जाती है।

पम्मी आधुनिक नारी है। उसका पूरा ढ़ंग पाश्चिमात्य है। उसी के माध्यम से आज के आधुनिक नारी की स्थिति ध्यान में आती है। अगर कोई नारी अकेली रहने का साहस करती है तो समाज उसे घृणात्क दृष्टि से देखता है। साथ ही उसका मन भी कुण्ठित हो जाता है। यहाँ पम्मी के माध्यम से वासनात्मक पहलुओं को दिखाया है। इसके

साथ भारतीजी ने अपने उपन्यासों के माध्यम से विवाह को आवश्यक माना है। विवाह से मानव पशु न बनकर मानव ही रहता है।

च) <u>सुधा की बुआ</u> :-

"गुनाहों का देवता" उपन्यास में बुआ ग्राम्य एवं एक अशिक्षित नारी के रूप में दिखायी है। बुआ डा.शुक्ला की बहन और बिनती की माँ है। बुआ विधवा है। बिनती के जन्म के वक्त ही उसके पिता मर जाने से बुआ दिन-रात अपनी लड़की को कोसती है।

अशिक्षित नारी पर बुरी अंधश्रद्धाओं और परम्पराओं का इतना गहरा प्रभाव हो गया है कि वह उससे बाहर नहीं आ सकती है। क्योंकि शिक्षा के अभाव के कारण उसकी सोच विचार करने की क्षमता कम होती है। वह अपने ही जिद पर अड़ी रहती है। साथ ही वह जितनी हठीली होती है, उतनीही स्नेही होती है। बुआ रूढ़ी-परम्पराओं में घिसी हुअी है। शगुन-अपशगुन वह बहुत मानती है। वह घर के बाकी लोगों के साथ अच्छा बर्ताव करती है, लेकिन बिनती को हर वक्त ड़ाँटती, फटकारती है। क्योंकि बिनती के जन्मते ही तुरंत बुआ का पति मर गया है। इसलिए बुआ बिनती के जन्म को अपशगुन मानती है। साथही वह छुआ-छुत वगैरा बातें भी मानती है - बाहर से घूमकर आयी बिनती को नहाने से पहले रसोई घर में किसी चीज को हाथ नहीं लगाने देती। बुआ बहुत हठीली है। कभी हार नहीं माननेवाली है।

साथही बुआजी एक स्नेहसंवलित नारी के रूप में भी दिखायी देती है। वह सुधा से बहुत प्रेम करती है। बुआजी अत्यंत परिश्रमी है। सुधा की शादी की तैयारी सिर्फ पंद्रह दिनों में करती है। सुधा की शादी की तैयारी इतनी जल्दी करती है कि बुआ का हाथ कोई नहीं पकड़ सकता।

"चार बोरा गेहूँ उन्होंने साफ करके कोठरियों में भरवा दिये। कम से कम पाँच तरह की दालें लायी थी। बेसन पिसवाया, दाल दरवायी, पापड़ बनवायें, मैदा छनवार्यी, सूजी दरवार्यी, बरी-मुँगौरी ड़लवायी, चावल की कचरियाँ बनवायीं और सब को अलग-अलग गठरी में बाँधकर रख दिया।" [१५]

बुआजी अत्यंत निर्भयी एवं साहसी है। वह यात्रा में रेल गाड़ी से लौट रही थी, उसी वक्त मारवाड़ी उन्हें सेकण्ड् क्लास में नहीं ले रहा था, तो उस वक्त जिस साहस के साथ उन्होंने प्रवेश पा लिया, वह सराहनीय है। उसकी भाषा अवधी के रूप में दिखायी देती है। साथही बुआजी व्यवहार का पालन करनेवाली दिखायी देती है। बुरी बात यह है कि अंत तक वह अपनी बेटी को नहीं अपनाती, जिसका ब्याह टूट जाता है।

बुआ दिन-रात अपनी लड़की को कोंसनेवाली, पुरातनपंथी, धार्मिक विचारोंवाली महिला है। बुआ एक ग्रामीण, अशिक्षित नारी का प्रतिनिधित्व करती है, जो अंधश्रद्धाओं पर ज्यादा विश्वास करती है। शिक्षा के अभाव के कारण नारी अंधश्रद्धाओं और रूढ़ी-परम्पराओं को चिपकी रहती है। पढ़े-लिखे लोगों के विचारों की वह घृणा करती है। यहाँ भारतीजी ने ग्राम्य, अशिक्षित नारी के जीवन की स्थिति पर प्रकाश ड़ाला है।

धर्मवीर भारती के उपन्यास "गुनाहों का देवता" की सभी नारियाँ कुण्ठित जीवन जीती हैं। निष्कर्ष रूप में कहा जा सकता है कि नारी स्वभाव से ही कोमल होती है, उसकी यहीं कोमलता उसके लिए अभिशाप बन जाता है। सुधा, बिनती और गेसू स्वभाव की कोमलता के कारण ही प्रणय-भावना का अनिष्ट फल भोगती है। उपन्यास की नायिका सुधा आदर्श नारी के रूप में प्रस्तुत हुई है, वह अपने जीवन के अंत तक अपना प्यार संजोये रखती है। पम्मी चन्दर को पवित्रता के नाम पर अपनी ओर खिंचती है। लेकिन अंत में उसके ध्यान में आता है कि कोई भी नारी अपने पुरूष को छोड़कर स्वतंत्र नहीं रह सकती है। बिनती समाज की रूढ़ियों से प्रताड़ित है। बिनती अपेक्षाकृत एक व्यवहारिक लड़की और एक निःस्वार्थ प्रेमिका के रूप में दिखायी देती है। बुआ अशिक्षित नारी है। जो रूढ़ी-परम्पराओं से कायल है। अंत तक वह किसी का नहीं मानती। अंत में वह सबको छोड़कर तिर्थाटन के लिए चली जाती है। गेसू के लिए उसका प्यार ही अभिशाप बन जाता है। इस तरह इस उपन्यास में सभी नारी पात्रों के जीवन में व्यथित हृदय और मन में अतृप्ति दिखायी देती है।

"गुनाहों का देवता" की एक भी नारी का जीवन सुखी एवं सफल नहीं है। सभी नारी पात्र असफलताओं से व्यथित है। धर्मवीर भारती जी के "गुनाहों का देवता"

उपन्यास की नारियाँ अपनी जीवन में सफलता नहीं पाती हैं। सभी नारियाँ प्रताड़ित हैं। इसलिए उनमें अतृप्ति ही दिखायी देती हैं।

२) **"सूरज का सातवाँ घोड़ा" के नारी पात्र :-**

"सूरज का सातवाँ घोडा" उपन्यास में धर्मवीर भारती जी ने नारी जीवन के कई चित्र प्रस्तुत किए हैं। मध्यवर्ग की नारी जीवन का प्रतिनिधित्व जमुना करती है। लीली उच्च मध्यवर्ग की है इसलिए वह मध्यम वर्ग के अपने पति को भी अपना प्रेम नहीं दे पाती है। लिली में अहंम् की भावना ज्यादा है। सत्ती शोषित वर्ग से सम्बन्धित है। बचपन से ही विधाता ने उसे जीवन के सुख-साधनों से वंचित करके दर-दर भटकने के लिए छोड़ दिया है। सत्ती का जीवन दारिद्रय में ही बीतता है।

क) जमुना :-

"सूरज का सातवाँ घोडा" के "पहली दोपहर" में हमारे सामने जमुना का चरित्र आ जाता है। जमुना इस उपन्यास की नायिका है। जमुना पंद्रह साल की है। रंग गेहुआँ और स्वभाव भी मीठा, हँसमुख और मस्त है।

लड़की को पराये घर का धन माना जाता है। क्योंकि शादी के बाद वह दूसरे के घर जायेगी। इसलिए उसे शिक्षा देना फिजूल काम माना जाता है और साथ ही आर्थिक अभाव हो, तो नारी को शिक्षा से वंचित रहना ही पड़ता है। जमुना की भी हालत ऐसी ही है। आर्थिक अभावों के कारण जमुना की शिक्षा जल्दी ही बंद हो जाती है। जमुना का बचपन का दोस्त माणिक मुल्ला है। जमुना की शिक्षा छुट जाने के बाद वह मन बहलाव के लिए कहानियाँ पढ़ती है। सिनेमा के गीत याद करती है - "इलाहाबाद से निकलने वाली जितनी सस्ते किस्म की प्रेम कहानियों की पत्रिकाएँ होती थी वे जमुना उन्हीं से मँगवाती थी और शहर के किसी भी सिनेमाघर में अगर नयी तसवीर आयी तो उसकी गाने की किताब भी माणिक को खरीद लानी पड़ती थी।"[१६]

लड़की की समय पर शादी होना, भारतीय जीवन की धारणा है। लड़की

सयानी होने पर माता-पिता को उसकी शादी की चिंता लगती है। जमुना बीस बरस की हो गयी थी, तब तक उसकी शादी नहीं हो पायी इसलिए उसके माता-पिता चिंताग्रस्त होते हैं।

जमुना प्रेमिका के रूप में प्रस्तुत हुआी है। वह पहले तन्ना की प्रेमिका है, जो तन्ना पर बहुत प्रेम करती है। तन्ना और जमुना पास पड़ोसी है। तन्ना और जमुना में बहुत पटती है। इसलिए पास-पड़ोसी और मुहल्लेवालों को लगता है कि जमुना का ब्याह तन्ना से ही होगा।

अर्थाभाव नारी जीवन पर गंभीर परिणाम करता है। इसी में दहेज भी बेटी की शादी के लिए अनिवार्य हो गया है। अर्थाभाव के कारण दहेज देने की असमर्थता होती है, फलतः अपेक्षित स्थल की प्राप्ति नहीं हो सकती है। कुछ वरपिता लड़के द्वारा लड़की की पसंदगी के बावजूद भी दहेज के लिए अड़ जाते हैं और शादी टूट जाती है। जमुना और तन्ना एक-दूसरे को चाहते हैं। लेकिन उनका ब्याह नहीं हो पाता है। जमुना का खानदान उच्च है और तन्ना नीच गोत का है। फिर भी जमुना के घरवाले शादी के लिए तैयार हो जाते हैं। लेकिन तन्ना के पिता को दहेज चाहिए और जमुना के घरवाले आर्थिक अभाव के कारण उतना दहेज नहीं दे सकते हैं। इसी वजह से जमुना की शादी तन्ना से नहीं हो जाती है। शादी टूट जाने से जमुना बहुत रोती है।

थोड़ेही दिनों में वह माणिक मुल्ला पर प्यार के ड़ोरे ड़ालती है। माणिक मुल्ला जब रात में गाय को रोटी खिलाने आता है, तब रोज रात जमुना माणिक मुल्ला से मिलने आती है। जमुना माणिक को बहुत चाहती है। जब जब माणिक गाय को रोटी खिलाने आता है, तब तब जमुना उसके साथ बाते करने का मौका प्राप्त करती है।

एक बार माणिक अंधेरे के ड़र के मारे जल्दी घर जाना चाहता है। इसलिए वह जमुना को झुठ ही बतलाता है कि उसे भुख लगी है वह घर जाना चाहता है। लेकिन जमुना उसे नहीं जाने देती। जमुना माणिक को मीठे पूए लाकर खिलाती है। माणिक मुल्ला

स्वयं को नमकीन पूए अच्छे लगते हैं ऐसा बहाना बनाता है। लेकिन जमुना बेचारी उसके लिए बेसन के नमकीन पूए भी बनाके लाती है।

कुछ नारियाँ अपना प्यार पाने के लिए पुरूष या प्रेमी के साथ मीठे व्यवहार करती है, फिर भी वह असफल होती है। कुछ नारियाँ ऐसी भी हैं, जो पुरूष को ड़रा-धमकाकर अपने से प्यार करने के लिए मजबुर करती हैं। माणिक भी बाद में जमुना से मिलने के लिए अना-कानी करता है तो जमुना उसे धमकाती है, इसी वजह से माणिक को आना ही पड़ता है। वह माणिक को कहती है - "देखो माणिक, तुमने नमक खाया है और नमक खाकर जो अदा नहीं करता उस पर बहुत पाप पड़ता है, क्योंकि ऊपर भगवान देखता है और सब बही में दर्ज करता है।"[१७]

जमुना माणिक से बड़ी है। वह माणिक का प्यार जबरदस्ती से पाना चाहती है। वह माणिक की खाने की कमजोरी को जानती है और यह भी जानती है कि माणिक के संस्कार कैसे हैं। अतः वह नमक की अदायगी के लिए उसे विवश करती है कि माणिक रोज उसके पास उसे मिलने आए।

आर्थिक अभाव में नारी को बहुत कुछ सहना पड़ता है। उसे शादी-ब्याह जैसे बातों में भी समझौता करना पड़ता है और उसे असंगत ब्याह करना पड़ता है। यह नारी जीवन में आनेवाली सबसे बड़ी दयनीयता है। जमुना एक वृद्ध और तिहाजू व्यक्ति से ब्याही जाती है, जिसकी दो बीबीयाँ मर चूकी है। जमुना का पिता इस विवाह का विरोध भी करता है, परंतु माता की वजह से जमुना का विवाह तिहाजू पति से हो जाता है।

शादी में जब पहली बार जमुना अपने पति को देखती है तब बहुत रोती है, पर जब जेवर देखती है तो खुश होती है। जब जमुना पहली बार मैके आती है तब खुशी से अपनी सखियों को मिलने जाती है और अपने पति का बहुत गुणगान करती है - "अरी कम्मो, वो तो इतने सीधे हैं कि जरा-सी तीन पाँच नहीं जानते। ऐ, जैसे छोटे-से बच्चे हो। पहली देनों के मैकेवाले सारी जायदाद लूट ले गये, नहीं तो धन फटा पड़ता था।

मैंने कहा अब तुम्हारे साले-साली आवेंगे तो बाहर से ही विदा करूँगी, तुम देखते रहना। "१८

शादी के बाद जमुना जादा दिन मैंके नहीं रहती, वह जल्दीही ससुराल चली जाती है क्योंकि उसे यह आशंका होती है कि पति ने दिया हुआ धन पिता के लिए समाप्त हो जाएगा और अपने बालबच्चों के लिए कुछ तो रखना चाहिए यह सोचकर वह चली जाती है। इसके बारे में माणिक मुल्ला कहते हैं - "नारी पहले माँ होती है तब और कुछ। इसका जन्म ही इसलिए होता है कि वह माँ बने। सृष्टि का क्रम आगे बढ़ावे। यही उसकी महानता है। "१९

माँ बनने में नारी जीवन की सार्थकता मानी जाती है, अन्यतः समाज से उसे प्रताड़ित होना पड़ता है। कई नारियाँ प्रतिष्ठा के लिए झुठी पवित्रता का आवरण लेती है। अपना पति बुढ़ा होने के कारण जमुना संतान प्राप्त नहीं कर सकती है। इसलिए जमुना-रामधन के अनैतिक सम्बन्धों से जमुना को संतान-प्राप्ति होती है। बच्चे का जन्म होते ही बुढ़ा जमींदार मर जाता है। जमींदार की मृत्यु के बाद जमुना विधवा हो जाती है। इतनी बड़ी कोठी में अकेली न रह सकने के कारण रामधन को एक कोठरी दे देती है और पवित्रता से जीवन यापन करने लगती है - "जमुना निम्न मध्य वर्ग की भयानक समस्या है। आर्थिक नींव खोखली है। उसकी वजह से विवाह, परिवार, प्रेम सभी की नींवे हिल गयी हैं। अनैतिकता छायी हुई है। पर सब उस ओर से आँखें मूँदे हैं। असल में पूरी जिंदगी की व्यवस्था बदलनी होगी। "२०

जमुना के इस चारित्रिक पतन में पूर्णतः समाज जिम्मेदार है। - "जमुना जैसी नारी के पिछे समाज के अत्याचारों और अनाचारों की कहानी है। समाज की मान्यतायें ही ऐसी हैं, समाज में जो थोथा आदर्शवाद दिन-पर-दिन विकसित हो रहा है बिना उसको नष्ट किये समाज में फैली अनाचार की गहरी नींव को भी नहीं कुरेदा जा सकता। ये नींवे इतनी गहरी हैं कि ऊपर से इन पर झूठी पवित्रता ने आवरण ड़ाल दिया है। "२१

अभावों में पली नारी को जिंदगी भर दुःख सहने पड़ते हैं। जमुना धर्मपरायण स्त्री होते हुए भी उसे नैतिक पतन का कारण बनना पड़ता है।

ख) <u>तन्ना की बुआ</u> :-

नारी में अगर कोई मजबुरी है तो उसका फायदा बाकी लोग उठाते हैं। जैसे विधवा नारी को अपने वैधव्य के कारण भी बहुत सहना पड़ता है। अगर वह अत्याचार सहकर भी चुप बैठें तो समाज उसे अच्छा कहेगा और वह प्रतिकार करें तो उसे प्रताड़ित कर दिया जाता है।

महेसर दलाल अपनी पत्नी मर जाने की वजह से घर में बच्चे सँभालने के लिए एक औरत को घर लाते हैं। उस औरत को सब बच्चे "बुआ" कहें ऐसा हुक्म महेसर दलाल बच्चों को देता है।

नारी वृत्ति सेवामयी होती है। वह किसी की भी सेवा तन मन लगाके करती है। लेकिन कभी कभी वह सब निष्फल हो जाता है। इस उपन्यास में बुआ क्रोध से क्यों न हो वह घर की देखभाल अच्छी तरह से करती है। महेसर दलाल के आराम की पूरी व्यवस्था वह करती है, तीनों लड़कियों के चरित्र और मर्यादा की कड़ी जाँच करती है, तन्ना की फिजूल खर्ची रोक लेती है। तमाम बिखरती हुअी गृहस्थी को बड़ी सावधानी से सँभाल लेती है। लेकिन अंत तक बुआ नहीं निभ सकती। बुआ और महेसर दलाल की नहीं पटती और बुआ को घर छोड़कर जाना पड़ता है।

अंत में जब महेसर दलाल को तन्ना की गृहस्थी के लिए घर का प्रबंध करना पड़ता है। तो महेसर दलाल घर पर सोना छोड़ देता है। बुआ इसका विरोध करती है - "नतीजा यह हुआ कि महेसर दलाल ने साफ-साफ कह दिया कि उसके घर में रहने से मुहल्ले में चारों तरफ चार आदमी चार तरह की बाते करते हैं। महेसर दलाल ठहरे इज्जतदार आदमी, उन्हें बेटे-बेटियों का ब्याह निबटाना है और यह ढ़ोल कब तक अपने गले बाँध रहेंगे। अंत में हुआ यह कि बुआ जैसे हँसते, इठलाते हुए आयी थीं वैसे ही रोते-कलपते अपनी गठरी-मुठरी बाँधकर चलीं गयीं और बाद में मालूम हुआ कि तन्ना की माँ के तमाम जेवर और कपड़े जो बहन की शादी के लिए रखे हुए थे, गायब हैं।" [२२]

हिंदु समाज में वैधव्य और आर्थिक अभाव का नारी जीवन एक अभिशाप है। विधवा नारी भी एक जीवित प्राणी है, यह कैसे सम्भव है कि मृत पति के प्रति उसका प्रेम-भाव स्थिर तथा अचल रहे। अतः विधवा के लिए पतिव्रत धर्म एक खोखला, सामाजिक एवं नैतिक मूल्य है। वैज्ञानिक सत्य तो यह है कि जीवित प्राणी परिस्थितियों से समझौता करता है। विधवा भी पति की मृत्यु के पश्चात नयी परिस्थितियों से समझौता करती है। अनैतिकता का सहारा लेती है। उसके इस प्रकृति-जन्य समझौते का समाज फायदा उठाता है और उसे बाद मे ठुकराता है। तब नारी की स्थिति अत्यंत दयनीय होती है। वह क्रुर बनती है और अपना बेसहारा जीवन जीने के लिए चोरी जैसा दुष्कृत्य करती है। इस तरह बुआ अपना मार्ग अपनाती है।

ग) लीली :-

"सूरज का सातवाँ घोडा" उपन्यास में लीली एक महत्त्वपूर्ण नारी पात्र है। जो पढ़ी-लिखी और रूपवती भी है। वह अमीर घर की लड़की है। उसकी माँ विधवा है।

सच्ची नारी अपने प्रेमी के बगैर किसी दूसरे का विचार नहीं कर सकती है। इस अवस्था में उसकी शादी किसी दूसरे स्थान तय होती है तो उसे अपने प्रेमी का बिछोह सहन नहीं होता है। मगर नारी रोने के अलावा कुछ नहीं कर सकती है। यही तो नारी की मजबूरी है। लीली माणिक मुल्ला की प्रेमिका है। जो माणिक को बहुत चाहती है। उसे माणिक को देखे बगैर चैन नहीं मिलता है। जब लीली की शादी किसी दूसरे के साथ तय होती है तब लीली नाराज होती है। वह माणिक से मिलती है और बहुत रोती है। वह माणिक को एक दिन भी छोड़कर दूर नहीं रहना चाहती है। लीली ऐसा मानती है कि उसके जीवन में उसके व्यक्तितत्व में जो कुछ है वह तो माणिक ने ही दिया हुआ है।

लीली और माणिक के रोमांस का वर्णन एक स्थान पर इस प्रकार है - "सहसा तड़ककर दूर कहीं बिजली गिरी और लिली चौंककर भागी और बदहवास माणिक के पास आ गिरी। दो पल तक बिजली की दिल दहला देने वाली आवाज गूँजती रही और

लिली सहमी हुई गौरेया की तरह माणिक की बाँहों के घेरे में खड़ी रही। फिर उसने आँखे खोली और झुक कर माणिक के पाँवों पर दो गरम होंठ रख दिये। माणिक की आँखें में आँसू आ गये। बाहर बारिश धीमी पड़ गयी थी।"[२३] इस तरह का लीली और माणिक का प्रेम सफल नहीं होता। लीली की शादी तन्ना से होती है। लेकिन तन्ना के साथ लीली की नहीं पटती। साथ ही तन्ना की गरिबी देखकर लीली तन्ना को छोड़कर अपने माँ के साथ मैके चली जाती है।

नारी में अपने प्रेमी के साथ शादी करने के लिए साहस नहीं होता। समाज की ड़र से वह किसी दूसरे के साथ शादी करती है और अपना जीवन शोकांतिक बना लेती है। लीली जीवन के शुरू में रोमानी प्रेमिका है। जो निरर्थक है। उत्तरार्ध में उसके जीवन में पति-पत्नी के मानसिक स्तरों की विभिन्नता के कारण शोकांतिका निर्माण होती है।

लीली समाज की भावनाप्रधान तथा रोमेण्टिक युवतियों की प्रतिनिधि है, जिसका पूरा जीवन जमुना की तरह दुःखद है।

घ) <u>सत्ती</u> :-

"सूरज का सातवाँ घोडा" उपन्यास में सत्ती एक अशिक्षित निम्नवर्गीय नारी पात्र के रूप में आती है। सत्ती एक अनाथ, निराश्रित, सुन्दर, अशिक्षित बलूची लड़की है। चमन ठाकूर ने इसका पोसन किया है। चमन ठाकुर का एक हाथ कटा हुआ है। अतः सत्ती साबुन जमाती है और उसके कमर में एक काले बेंट का चाकू रहता है, उसी काले बेंट के चाकू से साबुन काट कर उन्हें दुकानदारों के यहाँ पहुँचाती है और उसका दाम वसूल कर लाती है। इसी तरह चमन ठाकूर के साबुन बनाने के व्यवसाय में प्रमुख श्रमभाग सत्ती का है। सत्ती के माता-पिता बचपन में क्वेटा के भुकंप में ही छोड़कर मर गये हैं। तब से चमन ठाकुर उसे पालने-पोसने लगा है। चमन ठाकुर को वह चाचा कहती है।

सत्ती को परिस्थितियों से मजबूर होकर घृणित जीवन बिताना पड़ता है, फिर भी वह अपने शील या स्त्रीत्व को किसी भी शर्त पर बेचने के लिए तैयार नहीं है।

स्वयं परिश्रम कर अपनी जीविका का उपार्जन करती है। मित्रता उसका एक विशिष्ट गुण है।

माणिक मुल्ला के अनुसार - वह लडकी अच्छी नहीं है क्योंकि उसका रहन-सहन अलग ढ़ंग का है। वह हर परिचित-अपरिचित व्यक्ति से बातें करती है। लेकिन उसकी ओर कोई बुरी निगाह से देखता है तो वह अपनी कमर में लटके रहनेवाले बेंट के चाकू से उसे धमकाती है। वह एक साबुनवाली है। जिसे सभी पहचानते है। उसके बारे में धर्मवीर भारती जी ने लिखा है कि - "हर दुकानदार उसके सिर पर बँधे रंग-बिरंगे रूमाल, उसके बलूची कुरते, उसके चौड़े गरारे की ओर एक दबी निगाह ड़ालता और दूसरे साबुनों के बजाय पहिया छाप साबून दुकान पर रखता, ग्राहकों से उसकी सिफारिश करता और उसकी यह तमन्ना रहती कि कैसे सत्ती को पखवारे के अन्त में ज्यादा से ज्यादा कलदार दे सके।"[२४] सत्ती के बारे में शैल रस्तोगी कहते हैं - "स्वाधीन व्यक्तित्ववाली इस मेहनती सत्ती में कुछ ऐसा था जो न पढ़ी-लिखी भावुक लिली में था और न अधपढ़ी दमित मनवाली जमुना में था। इसमें एक सहज, स्वस्थ ममता थी जो हमदर्दी चाहती थी, हमदर्दी देती थी, जिसकी मित्रता का अर्थ था एक दूसरे के दुःख सुख, श्रम और उल्हास में हाथ बँटाना।"[२५]

माणिक मुल्ला के साथ सत्ती की गहरी मित्रता है। मित्रता ही आगे चलकर प्रेम में परिवर्तित होती है। सत्ती माणिक मुल्ला से बहुत प्यार करती है। वह चाहती है कि माणिक इंटर पास करके लाट साहब के दप्तर में काम करें। किन्तु माणिक इन्टर के आगे पढ़ना चाहता है। वह माणिक के खर्चे के लिए अपने हाथ की अँगुठी निकालकर देना चाहती है। माणिक उसे नहीं स्वीकारता है। तब वह बहुत दुःखी होती है।

भारतीय संस्कृति पुरूष प्रधान संस्कृति है। बहुत बार स्त्री की भावनाओं की अवहेलना होती है। कभी कभी पुरूष की अधमता नारी को धोके में धकेल देती है। जहाँ भी अवसर मिले पुरूष स्त्री का भोग लेने की ताक में रहता है। सत्ती को भी चमन ठाकुर ने बुरी निगाह से देखना शुरू किया और महेसर दलाल से पाँच सौ रूपए लेकर उसके

पास सत्ती को भेजने की शर्त स्वीकार करता है। अब चमन ठाकुर को सत्ती और माणिक का मिलना पसंद नहीं पड़ता है। सत्ती के ध्यान में आते ही सत्ती ने माणिक को अपने यहाँ मिलने के लिए आने को मना करती है।

नारी अपने प्रेमी पर बहुत विश्वास करती है। नारी का प्यार सच्चा प्यार होता है। लेकिन प्रेमी ड़रपोक या दगाबाज निकलता है, तब उस स्थिति में उसके आत्मविश्वास को भारी ठेंस पहुँचती है। यहाँ उसका मोहभंग हो जाता है। उस विशिष्ट स्थिति के कारण उसका व्यक्तितत्व ही दब जाता है तथा उनको अपनी शक्ति, सामर्थ्य, निर्णय करने की क्षमता आदि पर विश्वास नहीं रह पाता है। वह हताश होकर अपना सब खो बैठती है। उसे एक पशु जैसा जीवन जीना पड़ता है। सत्ती माणिक के साथ भागने के उद्देश्य से माणिक के घर आती है किंतु ड़रपोक और दगाबाज माणिक उसे महेसर और चमन के हवाले कर देता है। सत्ती को माणिक से घृणा हो जाती है। कारण उसे चमन ठाकुर और महेसर दलाल दोनों की वासना का शिकार बनना पड़ता है। माणिक मुल्ला के विश्वासघात के कारण ही उसे जन्मभर दुःख भोगना पड़ता है और अंत में एक भिखारिण के रूप में हमें सत्ती दिखती है। गाडी खिंचती, चमन ठाकुर को गाड़ी में बिठाये और एक भिनकता बच्चा गोदी में लिए दिखायी देती है। सत्ती का विद्रोह, सत्ती की स्वाधीनता सब कुछ क्रुरता और पाशविकता के हाथ का खिलौना मात्र बनकर रह जाते है।

नारी कितनी भी विद्रोही हो, कितनी ही होशियार हो उसको अपनी कोमलता और शारीरिक दुर्बलताओं के कारण उसे पशु जैसा जीवन जीना पड़ता है।

उपरयुक्त स्त्री पात्रों के अतिरिक्त कुछ नाममात्र नारीपात्र है। - "कम्मो को लिली की यथार्थवादी एवं अभावुक सहेली के रूप में, माणिक की भाभी अत्यंत लोभी और बेईमान है जो मौका पाकर सत्ती के गहनों का बैग हड़प लेती है, तन्ना की बहनों को कामकाजू और घरेलु लड़कियों के रूप में प्रस्तुत किया गया है। "[२६]

इन सभी पात्रों के माध्यम से भारतीजी ने विवाह का खोखलापन युवक-युवतियों की कुण्ठा, झुठी नैतिकता आदि पर व्यंग्य किया है।

निष्कर्ष :-

"गुनाहों का देवता" की सभी नारियाँ प्रताड़ित हैं। सुधा और बिनती समाज की रूढ़ियों से प्रताड़ित हैं। सुधा चन्दर से प्यार करती है और उसकी शादी कैलाश से हो जाती है। इसी वजह से नाहक ही वह पति कैलाश से घृणा करती है। घिस-घिसकर मृत्यु तक पहुँचने के अतिरिक्त उसे कोई दूसरा रास्ता नहीं मिलता है। बिनती एक व्यवहारिक लड़की है। गेसू का प्यार ही उनके जीवन का अभिशाप बन जाता है। सुधा, बिनती और गेसू तीनों नारियों के हृदय का मानसिक संघर्ष उपन्यास में दिखाया है। पम्मी वासना से घृणा करती हुओ भी चन्दर के अलिंगन पाश में आने के लिए नहीं हिचकती है।

"सूरज का सातवाँ घोडा" उपन्यास में धर्मवीर भारती जी ने नारी जीवन के कई चित्र प्रस्तुत किए हैं। इस उपन्यास में महत्त्वपूर्ण पात्रों में स्त्री पात्रों का स्थान विशिष्ट है। मध्यम वर्ग की नारी का प्रतिनिधित्व जमुना करती है। जमुना अल्पशिक्षित और कुण्ठित मनवाली नारी है। जो माणिक और तन्ना से प्यार करती है। लेकिन आर्थिक अभाव के कारण उसका ब्याह एक तिहाजू पति से हो जाता है। लिली जो माणिक मुल्ला की दूसरी प्रेमिका के रूप में आती है। लिली का यह प्रेम मोहग्रास्तता से मुक्त था केवल प्यार को एक साधन मान लिया गया था। इसलिए यह प्यार सफल नहीं हो पाया। लिली के सामने आर्थिक समस्याओं की जटिलता नहीं इसलिए वह मध्यम वर्ग के अपने पति को भी अपना प्रेम नहीं दे पाती। सत्ती शोषित वर्ग से सम्बन्धित है। बचपन से ही विधाता ने उसे जीवन के सुखसाधनों से वंचित करके उसे जन्मभर भिखारिण बना दिया। इसप्रकार भारती के दोनों उपन्यासों की नारी पात्रों का जीवन अपेक्षाभंग, अस्वस्थ, अभिशप्त, मानसिक संघर्षों से परिपूर्ण एवं कुण्ठित दिखाई देता है।

उपन्यासों में अंकित नारी पात्रों की यह दयनीय अवस्था सामाजिक यथार्थ पर आधारित है। उपन्यास की सुधा समाज में भी पायी जाती है। इसप्रकार किसी भी पात्र के बारे में लेखक ने अतिशयोक्ति से काम नहीं लिया है। साथ ही समाज में जिसप्रकार की अवस्थाएँ पायी जाती है और जिसकी योजना लेखक ने अपने उपन्यासों में की है, उसके

चित्रण में लेखक ने कोई कसर नहीं रखी है। अतः उपन्यासों में अंकित नारी-जीवन सामाजिक परिप्रेक्ष्य के धरातल पर भी सही उतरता है। उपन्यास में चित्रित नारी-जीवन यथार्थ और वास्तविक नारी जीवन है।

३) भारती के उपन्यासों में अंकित नारी-जीवन :-

धर्मवीर भारती के उपन्यासों में कुल मिलाकर पच्चीस पात्र हैं। इनमें से नारी पात्र नौ हैं। भारती जी के उपन्यासों में विविध प्रकार के नारी पात्र पाए जाते हैं। प्रमिला डिक्रुज ईसाई महिला है तो गेसू मूस्लीम धर्म की है। बाकी नारी पात्र हिंदु है। भारती जी ने हिंदु धर्म के रीति-रिवाजों को इन पात्रों के माध्यम से दर्शाने का प्रयास किया है। सुधा, प्रमिला डिक्रुज, बिनती, जमुना, लिली आदि पात्र मध्यवर्गीय हैं और सत्ती निम्नवर्गीय है। इन सभी पात्रों के माध्यम से भारती जी ने स्वातंत्र्योत्तर काल की नारी का जीवन प्रस्तुत किया है।

मध्यकाल में कन्या का होना अशुभ माना जाता था। अतः उस काल में कन्या के जन्म के बाद उसे नष्ट किया जाता था। आज गर्भावस्था में ही शिशु का सेक्स जान लिया जाता है और लड़की हो तो गर्भपात किया जाता है। जन्म के पूर्व ही उसकी हत्या की जाती है। भारतीय समाज में लड़की के जन्मपर नाराजगी व्यक्त की जाती है, और लड़के के जन्म पर बाजे बजाये जाते हैं। कन्या जन्म अशुभ माना जाता है क्योंकि कन्या के जन्म लेते ही माता-पिता के सामने उसके विवाह और दहेज का प्रश्न सामने खड़ा रहता है। इसके साथ ही ज्यादातर भारतीय संस्कृति में ग्रामीण नारी का जीवन तो बहुत ही पिछड़ा हुआ है। कभी-कभी लड़की के जन्म के वक्त कुछ बुरी घटना घटित हो जाती है तो उस लड़की को कुलक्षणी माना जाता है। उसे जिंदगीभर समाज के ताने सहने पड़ते हैं। कभी कभी उस लड़की को कुलक्षणी मानकर अपनी माता से भी प्रताड़ित होना पड़ता है। इस अवस्था के दर्शन भारती ने अपने उपन्यासों से करवाये हैं।

नारी परिवार का महत्त्वपूर्ण अंग है। शादी से पहले वह लड़की, बहन के रूप में परिवार में कार्यरत रहती है। परिवार में नारी के साथ समान रूप में बर्ताव

किया जाता है, ऐसी बात नहीं, किसी लड़की को माता-पिता का ढ़ेर सारा प्यार मिलता है तो किसी को प्रताड़ना एवं लांछना भी मिलती है। उनके साथ होनेवाले व्यवहार के अनुरूप ही कुछ परिवारों में लड़कियाँ प्रसन्न दिखायी देती हैं तो कुछ अप्रसन्न। परिवारों में लड़की, बहन के रूप में नारी अन्य पारिवारिक सदस्यों की सेवा करती रहती है। घर के छोटे-छोटे कामों के साथ माता-पिता की सेवा शुश्रृषा करना, पिताजी की जरूरतों का खयाल करना आदि। इसप्रकार की लड़कियाँ माता-पिता के स्नेह से सम्पृक्त होती हैं। लेकिन कुछ लड़कियाँ दुर्भाग्यशाली होती है। माता-पिता के होते हुए भी किसी कारणवश वह माता-पिता के स्नेह से वंचित रहती है। किसी अनिष्टता को नारी को जिम्मेदार मानकर उसकी पताड़ना की जाती है। इस तरह लड़कियों की परवरिश प्रणालियों में तथा परिवार में प्राप्त मान सम्मान में अंतर देखने को मिलता है।

नारी की शिक्षा के क्षेत्र में भी यही स्थिति देखने को मिलती है। शिक्षा के बिना नारी की उन्नति असंभव है। जिस प्रकार पेट के लिए रोटी की आवश्यकता होती है, उसी प्रकार बुद्धि की भूख का शमन करने के लिए शिक्षा नितांत आवश्यक है। पढ़े-लिखे आदमी को त्रिनेत्री कहा जाता है। पुरूष के साथ नारी को भी शिक्षा की नितांत आवश्यकता है। मध्यकाल में नारी के लिए शिक्षा का दरवाजा बंद था। लेकिन आधुनिक काल में नारी-शिक्षा को अधिक महत्त्व दिया जाता है। शिक्षा के कारण आधुनिक नारी अधिक उन्नत, समृद्ध, स्वावलंबी बन गयी है। तो दूसरी ओर नारी शिक्षा की ऐसी स्थिति है कि जिस लड़की के माता-पिता शिक्षित हैं उसे उसकी इच्छा के अनुरूप शिक्षा प्राप्त होती है तो जिस लड़की के माता-पिता अशिक्षित हैं उसे शिक्षा से वंचित रहना पड़ता है। इसमें भी कुछ नारियाँ विद्रोह करके शिक्षा प्राप्त करती हैं तो कुछ चुपचाप अपनी शिक्षा छोड़कर घर में बैठती हैं। इस तरह नारी के जीवन में शिक्षा को ज्यादा महत्त्व होने पर भी कुछ नारियों को शिक्षा मिलती है। तो कुछ नारियों को शिक्षा से वंचित रहना पड़ता है। देहात में नारी शिक्षा को भी गौण स्थान दिया जाता है। वहाँ लड़कियों की जल्दी शादी करने की प्रथा है। उस काल में नारी शिक्षित होने पर भी वह स्वतंत्र नहीं थी लड़की की शिक्षा का निर्णय माता-पिता पर निर्भर था। शिक्षित होने पर भी वह एक आश्रित नारी का जीवन जीती है। अगर उसे आगे की शिक्षा प्राप्त करनी है तो भी वह माता-पिता की

इच्छा के बगैर नहीं पढ़ सकती। इस तरह उस काल के शैक्षिक स्थिति को भारती जी ने अपने उपन्यासों में उजागर किया है।

इसके साथ ही नारी कभी अपना जीवन साथी चुनने में भी स्वतंत्र नहीं थी। बचपन से एक साथ रहे लड़का-लड़की जवानी में आकर एक-दूसरे के प्रेमी बन जाते हैं। यह बदलाव खुद उनकी समझ में भी नहीं आता है। दोनों भी एक-दूसरे से अपने मन के यह नाजुक भाव छुपाने की कोशिश करते हैं। बचपन की दोस्ती जवानी में आकर प्यार में परिवर्तित होती है। परंतु इस बात को वे किसी के सामने या एक-दूसरे के सामने भी स्वीकार नहीं करते हैं। इसी प्रकार किसी कारण वश जब दो प्रेमियों का मिलन संभव नहीं हो पाता, तो उनका यह प्रेम अव्यक्त ही रह जाता है। प्रेम नारी के जीवन का सहारा है, तो प्रेम की असफलता उसे जीते-जी मौत के दर्शन कराती है। प्यार में असफल होने पर नारी अपने आपको संसार की सबसे बड़ी दुःखी व्यक्ति समझने लगती है। उसके पास सबकुछ होने के बावजूद भी वह अपने आप में खालीपन महसूस करती है। उसे यह जीवन विरान लगता है। समाज के ड़र से नारी अपने प्रेम का त्याग करती है और किसी दूसरे के साथ शादी करती है और अपना जीवन पूर्णतः शोकांतिका बनाकर जीवन का अंत करती है। इस प्रकार के त्यागी नारी के जीवन को भारती जी ने आदर्श माना है। धर्मवीर भारती जी ने प्रेम के विविध पहलुओं को चित्रित कर नारी के जीवन में आदर्श एवं त्यागपूर्ण प्रेम को महत्त्व दिया है। दूसरों के लिए अपने सुख का त्याग करना, नारी जीवन के इस परम्परागत आदर्श का भारती ने समर्थन किया है।

स्त्री और पुरूष का सच्चा प्रेम अलौकिक होता है। उसमें वासना या स्वार्थ की जरा भी बू नहीं होती। प्रेम में पवित्रता का बहुत बड़ा महत्त्व रहता है। इसी तरह के प्रेम को धर्मवीर भारती जी ने अपने उपन्यासों में आदर्श प्रेम माना है। दरअसल प्रेम का सम्बन्ध आत्मा से होता है, परंतु कुछ नारियाँ शारीरिक आकर्षण को ही प्रेम समझ बैठती हैं। उनकी नजर में प्रेम की पवित्रता और वासना एकही है। आत्मा की सुंदरता वे कभी देखही नहीं पाती। शारीरिक आकर्षण और सुंदरता को वे महत्त्व देती हैं। इसीकारण ही उनका प्रेम असफल हो जाता है। इससे स्पष्ट है कि शारीरिक प्रेम क्षणिक होता है,

आत्मा का प्रेम अमर होता है। शारीरिक प्रेम ज्यादा दिन नहीं टिकता है। वह असफल हो जाता है। इसतरह धर्मवीर भारती जी ने अपने उपन्यासों के नारी जीवन में असफल प्रेम को भी दर्शाया है।

भारतीजी ने प्रेम के साथ साथ विवाह को भी ज्यादा महत्त्व दिया है। विवाह समाज की अनिवार्यता है। संसार में अनैतिकता को रोकने का एक मात्र उपाय विवाह है। प्रत्येक देश की विवाह के बारे में अपनी परम्परायें होती है, आचार-विचार होते हैं। उन्हीं के अनुसार लोग विवाह के सम्बन्ध में सोचते हैं। सामाजिक संगठन में विवाह को महत्त्वपूर्ण स्थान है। यौवन की दहलीज पर चरण रखते ही माता-पिता कन्या का विवाह करना अपना कर्तव्य समझते हैं। जल्दी ही अपनी लड़की का हाथ पीला कर देते हैं। विवाह के कारण स्त्री-पुरूष शारीरिक और मानसिक जीवन का संतुलन बना रहता है। वे पारिवारिक बंधन में बंध जाते हैं; परंतु यदि पति ओर पत्नी का शरीर के साथ-साथ मन का मिलन भी हो जाये तो उनका वैवाहिक जीवन पूर्णतया सफल हो जाता है। वैवाहिक जीवन की सफलता दोनों की एकनिष्ठता पर निर्भर रहती है। अगर नारी का इच्छित व्यक्ति से ब्याह न हो जाये तो उसे आजन्म पीड़ित रहना पड़ता है। धर्मवीर भारती जी ने नारी जीवन में विवाह अनिवार्य माना है। इनके उपन्यास में पहले पम्मी विवाह को तुच्छ मानती है और बाद में विवाह को महत्त्वपूर्ण मानती है। इसके माध्यम से धर्मवीर भारती जी ने समाज की परिवर्तनशीलता को दर्शाया है। कई नारियों को अनमेल विवाह के कारण जल्द ही वैधव्य प्राप्त होता है। भारतीय समाज में विधवाओं की स्थिति अत्यंत दयनीय है। सामाजिक समारोहों में उसकी उपस्थिति को अमंगल सूचक माना जाता है। उसके पुनर्विवाह के लिए मान्यता नहीं है। अतएव विधवा कितनी भी छोटी उम्र की क्यों न हो उसे अपनी शारीरिक और मानसिक भावनाओं को मारकर जीवन जीना पड़ता है। भारतीय संस्कृति में विधवा को नारकीय जीवन जीना पड़ता है। उसकी उपेक्षा की जाती है। उसकी सारी इच्छायें, व्यक्तिगत अभिलाषायें समाज की बेदी पर चूर चूर कर दी जाती है। पति के न होने पर भी पत्नी को पति के प्रति एकनिष्ठ रहना पड़ता है। भारतीय समाज में विधवा का विवाहबाहय यौन सम्बन्ध अनैतिक माना जाता है। परंतु इस परंपरागत धारना को भी नारियों का विरोध हो रहा है।

मध्यकाल में विधवा की स्थिति बहुत शोचनीय थी। घर की अंधेरी कोठरी में उसे बंद किया गया था। परंतु आधुनिक परिवेश में विधवाओं की स्थिति में काफी अंतर आ गया है। आज कतिपय विधवाएँ वैधव्य में घुट-घुटकर जीना पसंद नहीं करती है। अपनी स्वाभाविक विकृतियों को दबाना नहीं चाहती है। कुछ विधवायें स्वावलंबी बनकर किसी एखाद पुरूष के साथ जुड़ जाती है और पवित्रता से जीवन जीने लगती है। शरीरविक्रय का व्यवसाय करने की अपेक्षा भारती जी इसे कई गुना अच्छा मानते हैं।

साथही अशिक्षा और अज्ञान की वजह से अंधश्रद्धाओं का अस्तित्व कायम है। समाज में अनेक प्रकार के अंधविश्वास पाये जाते हैं। शगुन-अशगुन के रूप में बहुत सारे अंधविश्वासों से समाज भरा है। अंधश्रद्धाओं से ज्यादा जकड़ी हुअी नारियाँ है, जो नारियाँ अशिक्षित है। अछूत या निम्नवर्गीय लोगों को सवर्णों के घर में प्रवेश देना पाप माना जाता है। साथ ही पूजा-अर्चा के वक्त अगर वे घर में प्रवेश करते हैं तो अपवित्र माना जाता है। ऐसी बहुतसी अंधश्रद्धायें हैं। इसी वजह से नारी पूर्णतः पिछे पड़ी है। नारी जीवन के अंधश्रद्धामय अंगों के भी भारती ने अपने उपन्यासों में दर्शन कराये हैं। भारतीय संस्कृति में स्त्रीत्व का पूर्णत्व मातृत्व में माना जाता है। उसके बिना उसे समाज में सम्मान नहीं मिलता, इस ड़र से नारी संतानप्राप्ति के लिए अनेक अंधविश्वासों का शिकार बनती हैं। कभी-कभी संतानप्राप्ति के लिए अन्धविश्वास के पिछे छुपकर नारी अनैतिकता का सहारा लेती है।

नारी की सबसे बड़ी विवशता उसका आर्थिक अभाव है। आर्थिक अभाव नारी के लिए सबसे बड़ा अभिशाप है। स्त्रियों के पतन के कारण अंशिक रूप से सामाजिक और धार्मिक हो सकते हैं किंतु प्रमुखता आर्थिक ही अधिक है। आर्थिक अभाव के कारण नारी को शिक्षा से वंचित रहना पड़ता है। आर्थिक दरिद्रता के चंगुल में फँसे हुए माता-पिता जब कन्याओं के विवाह के लिए दहेज नहीं जुटा पाते तो उन्हें अपने लड़की का ब्याह किसी दुहाजु-तिहाजु बुढ़े के साथ या अयोग्य वर के साथ करना पड़ता है। कभी-कभी आर्थिक अभाव के कारण नारी अनैतिकता को भी अपनाती है।

इसप्रकार भारती जी ने अपने उपन्यासों के माध्यम से समसामायिक नारीजीवन को विविध नारी पात्रों के माध्यम से व्यक्त किया है। नारी जीवन की पारंपारिकता, आधुनिकता, नैतिकता-अनैतिकता, आदर्श प्रेम, शारीरिक प्रेम, भावुकता, कर्मठता, त्याग, स्नेह, मित्रता, जीवन के सुख-दुःख, नारीजीवन की कमजोरियाँ, प्रकृति-विकृति, पारिवारिक महत्त्व, सामाजिक स्थान, प्रसन्नता-अप्रसन्नता, दारिद्रय, मजबुरी आदि कई विषयों को भारती ने उजागर किया है। और यह स्पष्ट किया है कि नारी का जीवन आज भी संतोषजनक नहीं है। यह सही है कि नारी जीवन की सनातनी वृत्ति में परिवर्तन आ रहा है। बंधनों में शिथिलता आ रही है। फिर भी आज का नारी जीवन स्वस्थ नहीं है। पुरूष की तुलना में उसे गौण स्थान प्राप्त है। आदमी को हैसियत से आज भी उसकी तरफ नहीं देखा जाता है। शारीरिक शोषण के हेतु आज भी उसे तिकड़म में फँसाया जाता है। उसकी कमजोरियों का गलत लाभ उठाया जाता है, उसकी इच्छाओं का उचित सम्मान नहीं किया जाता है। अपने जीवन संबंधी तथा व्यवहारों सम्बन्धी निर्णय लेने की स्वतंत्रता उसे नहीं है। दहेज के अभाव में आज भी वह अनमेल विवाह का शिकार बनती है। विधवावस्था में उसे शरीरसुख के लिए अनैतिकता के कलंक से कलंकित होना पड़ता है। सुखी जीवन के खोज में उसे कई समस्याओं का सामना करना पड़ता है।

इसप्रकार धर्मवीर भारती ने अपने उपन्यासों के लघुपट द्‌वारा नारीजीवन के विविध पहलुओं को दर्शाने की असफल कोशिश की है। तथापि नारी जीवन के कई ऐसे अंग है, जो धर्मवीर भारतीद्‌वारा अस्पर्शीत रह चुके हैं और यह स्वाभाविक भी है कारण केवल दो उपन्यासोंद्‌वारा ग्रामीण तथा शहरी एवं पहाड़ी नारी जीवन के सर्व अंगों का चित्रण होना असंभव है।

<u>संदर्भ ग्रंथ सूची</u>

१. जयशंकर प्रसाद : "कामायनी", पृ.१०५

२. डा.चंद्रभानु सोनवणे : "धर्मवीर भारती का साहित्य : सृजन के विविध रंग", पृ.१००

३३. डा.धर्मवीर भारती : "गुनाहों का देवता", पृ.५४

४. वही : वही , पृ.६५

५. डा.कैलाश जोशी : "धर्मवीर भारती का उपन्यास साहित्य", पृ.३१

६. डा.शैल रस्तोगी : "हिंदी उपन्यासों में नारी", पृ.१६२

७. डा.धर्मवीर भारती : "गुनाहों का देवता", पृ.३४

८. वही : वही, पृ.८१

९. वही : वही, पृ.२५३

१०. वही : वही, पृ.१७१

११. डा.कैलाश जोशी : "धर्मवीर भारती का उपन्यास साहित्य", पृ.३६

१२. डा.धर्मवीर भारती : "गुनाहों का देवता", पृ.२२

१३. वही : वही, पृ.१४८

१४. वही : वही, पृ.२८४-२८५

१५. वही : वही, पृ.१७१

१६. वही : वही, पृ.२६

१७. डा.धर्मवीर भारती : "सूरज का सातवाँ घोडा", पृ.३१

१८. वही : वही, पृ.३९

१९. वही : वही, पृ.४०

२०. वही : वही, पृ.४५

२१. डा.शैल रस्तोगी : "हिंदी उपन्यासों में नारी", पृ.२५०

२२. डा.धर्मवीर भारती : "सूरज का सातवाँ घोडा", पृ.५६

२३. वही : वही, पृ.७१

२४. वही : वही, पृ.८०

२५. डा.शैल रस्तोगी : "हिंदी उपन्यासों में नारी", पृ.२५२

२६. डा.चंद्रकांता वर्मा : "डा.धर्मवीर भारती की गदयकृतियों का अनुशीलन",पृ.४५-४६